2 July 2021

॥ श्री ॥

श्री नटराज स्तोत्रम् ।

अथ चरणशृङ्गरहित नटराजस्तोत्रम् ।

(3)

सदञ्चित/मुदञ्चित/निकुञ्चित/पदं झलक/झलञ्चलित/मञ्जुकटकम्
पतञ्जलि/दृगञ्जन/मनञ्जन/मचञ्चल/पदं जनन/भञ्जनकरम् ।
कदम्बरुचि/मम्बरवसं/ परममम्बुदकदम्बकविडम्बकगलम्
चिदम्बुधि/मणिं बुधहृद/म्बुजरविं पर/चिदम्बरनटं हृदि भज ॥

With his foot curved in joy by the very nature of Truth and making a jingling sound by the bells on the anklet that adorns it, the one who is blemishless, of an unmoving abode, the one who destroys the cycle of life & death, is of the hue of the Kadamba Flower, who is the ultimate being, with the sky as his garments. Whose throat resembles the blue colour of all the oceans of the World, who is the jewel of consciousness, who is like the Sun to the lotus like hearts of the enlightened ones. Worship the dancing form of the great Lord at Chidambaram in your heart.

© www.madhaveeraghuveer.com

NOVEMBER '14

| S | M | T | W | T | F | S |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | 1 |
| 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 |
| 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 |

ॐ त्रिपुरमर्दनं अनन्तकृतकङ्कणं अखण्डदयं अन्तरहितं
विरिञ्चिसुरसंहति पुरन्दर/ विचिन्तितपदं/ तरुणचन्द्रमुकुटम्।
परं पदविखण्डितयमं/ भसितमण्डिततनुं/ मदनवञ्चनपरम्।
चिरन्तनममुं/ प्रणवसञ्चितनिधिं/ परचिदम्बरनटं हृदि भज ॥२॥

The destroyer who ~~vanished~~ vanquished the three worlds, who wears the great serpent - Anant like a bracelet, who is endless and ~~its~~ is of limitless compassions. whose feet are meditated upon, by the like of Brahma, Indra & other suras. who wears a crescent moon on his crown. who crushed Yama with his foot. whose body is smeared in ashes. Who won over the God of Love - Madana. who is eternal Lord. and who is the concentrated treasure of the sound Aum. Worship that Chidamaram dancing form of the Great Lord at your heart.

© www.madhaveeraghuveer.com

JANUARY '15

| M | T | W | T | F | S | S |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 | 2 | 3 | 4 |
| 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 |
| 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 |
| 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 |
| 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | |

(3)

अवन्तमखिलं / जगदभङ्ग | गुणतुङ्ग | ममतं धृत | विधुं सुरसरित-
तरङ्गनिकुरम्ब / धृतिलम्पट / जटं शमन | दम्भसुहरं | भवहरम् |
शिवं दशदिगन्तर | विजृम्भितकरं / करलसन्मृगशिशुं / पशुपतिम्
हर शशि | धनञ्जय पतङ्गनयनं / परचिन्मयवरं हृदि भजे ||३||

The Lord, who protects all, who is of unending auspicious qualities, and whose nature is difficult to grasp who held the multitudes of waves of the divine river Ganga in his matted locks of hair. who vanquished Yama's pride, and who breaks worldly cycles. the auspiscious one, whose arms spread wildly in all ten directions, who holds the young deer in his hand and who is the lord of all bound

| S | M | T | W | T | F | S |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | | | | | | 1 |
| 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 |
| 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 |

NOVEMBER '14

© www.madhaveeraghuveer.com

(8)

अनन्तनवरत्नविलसत्कटककिङ्किणीझलं झलंझलं झलरवम्
मुकुन्दविधिहस्तगतमद्दललयध्वनिधिमिद्धिमितनर्तनपदम् ।
शकुन्तरथबर्हिरथनन्दिमुखशृङ्गिरिटिभृङ्गिगणसंघनिकटम् ।
सनन्दसनकप्रमुखवन्दितपदं परचिदम्बरनटं हृदि भज ॥

The one whose anklets make a jingling sound as he dances, being studded with innumerable gems of the nine kinds of precious stones, whose feet dance, as Lord Vishnu and Brahma play the drums, offering a rhythem. The one who has for his close companions Lord Vishnu, who rides Garuda, Lord Kartikeya, who rides a peacock, his celestial troups including nandi shringi, Ritibhangi and others, the one whose feet are worshipped by the greats like Sanand, Sanak & others. Worship

© www.madhaveeraghuveer.com

JANUARY '15

| M | T | W | T | F | S | S |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 | 2 | 3 | 4 |
| 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 |
| 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 |
| 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 |
| 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | |

(१)

अनन्तमहसं त्रिदशवन्द्यचरणं मुनिहृदन्तर्वसन्तममलम्
कबन्धवियदिन्द्वग्निगन्धवहवह्निमखबन्धुरविमञ्जुवपुषम्
अनन्तविभवं त्रिजगदन्तरमणिं त्रिनयनं त्रिपुरखण्डनपरम्।
सनन्दमुनिवन्दितपदं सकरुणं परचिदम्बरनटं हृदि भज ॥१॥

The one ~~who~~ with neither end nor begining, who is revered by the Gods, who resides in the heart of sages and who is pure, whose form constitutes the primordial elements of Earth, Water, Wind, Space, Sun, Moon & Self. who is of unending Glory, who is the jewel of three worlds, who has three eyes and who is vanquished the three cities. the compassionate one whose feet are worshipped by sage sananda. Worship ——

| S | M | T | W | T | F | S |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | | | | | | 1 |
| 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 |
| 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 |

NOVEMBER '14

© www.madhaveeraghuveer.com

अचिन्त्यमहसं त्रिदशवन्द्यचरणं मुदितदनुजवसनमनम्
कलबुद्धिविधायिविविधानिगन्धवहवालिमरवबन्धुरांसे मञ्जुवपुषम् ।

अचिन्त्यमाकिवृन्दरुचिबन्धुरांसं कुञ्चितकुन्दनिकुरम्बधवलम् ।
मुकुन्दसुरवृन्दबलहनुकृतवन्दनलसन्तं महितकुण्डलधरम् ।
अकम्पमनुकम्पितराते सृजनमङ्गलनिधिं गजहरं पशुपाते प्र
धनञ्जयनुतं प्राणसम्भानपरं परचित्पदन्तरनटं हृदि भज ॥६॥

| JANUARY '15 | | | | | | |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| | | | 1 | 2 | 3 | 4 |
| 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 |
| 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 |
| 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 |
| 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | |
| M | T | W | T | F | S | S |

© www.madhaveeraghuveer.com

परं सुरवरं पुरहरं पशुपतिं जनितदन्तिमुखषण्मुखममुम्
9 मृडं कनककपिङ्गलजटं सनकपङ्कजरविं सुमनसं हिमरुचिम्।
असङ्गमनसं जलधिजन्मगरलकबलयन्तमतुलं गुणनिधिम्
10 सनन्दवरदं शमितमिन्दुवदनं परचिदम्बरनटं हृदि भज॥६॥

11

12

1

2

3

4

5

6

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | | | | | | 1 | NOVEMBER '14 |
| 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | |
| 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | |
| 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | |
| S | M | T | W | T | F | S | |

© www.madhaveeraghuveer.com

अजं क्षितिरथं भुजगपुङ्गवगुणं कनकशृङ्गिधनुषं करलसत्
9 कुरङ्गपृथुटङ्कपरशुं रुचिरकुङ्कुमरुचिं डमरुकं च दधतम्।
मुकुन्दविशिखं नमदवन्ध्यफलदं निगमवृन्दतुरगं निरुपमम्
10 सचण्डिकममुं झटितिसंहृतपुरं परचिदम्बरनटं हृदि भज ॥८॥

11

12

1

2

3

4

5

6

JANUARY '15

| M | T | W | T | F | S | S |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 | 2 | 3 | 4 |
| 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 |
| 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 |
| 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 |
| 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | |

© www.madhaveeraghuveer.com

अङ्गारिपान्थिनमञ्जं सितिधुरन्धरमलं करुणयन्तमखिलम्
ज्वलनमनलं दधतमनङ्गकरिपुं सततमिन्द्रसुरवन्दितपदम् ।
उदयदरविन्दकुलबन्धुशतबिम्बरुचि संहति सुगन्धिवपुषम्
पतञ्जलिनुतप्रणवपञ्जरशुकं पर चिदम्बरनटं हृदि भज ॥१॥

© www.madhaveeraghuveer.com

NOVEMBER '14

| S | M | T | W | T | F | S |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | | | | | | 1 |
| 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 |
| 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 |

इति स्तवममुं भुजगपुङ्गवकृतं प्रतिदिनं पठति यः कृतमुखः
सदः प्रभुपदद्वितय दर्शनपदं सुललितं चरणशृङ्गरहितम् ।
सरः प्रभवसम्भवहरित्पति हरिप्रमुख दिव्यनुतशङ्करपदम्
स गच्छति परं न तु जनुर्जलनिधिं परमदुःखजनकं दुरितदम् ॥

इति श्री पतञ्जलिमुनिप्रणीतं चरणशृङ्गरहित
नटराजस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

© www.madhaveeraghuveer.com

JANUARY '15

| M | T | W | T | F | S | S |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 | 2 | 3 | 4 |
| 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 |
| 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 |
| 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 |
| 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | |